4

समाजशास्त्र में शोध की विधियाँ और तकनीक

समाज विज्ञान का उद्देश्य मानव के व्यवहार की व्याख्या करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए समाज वैज्ञानिकों ने उपयुक्त क्रमबद्ध आँकड़ो को एकत्र करने की विधियाँ और तकनीक ढूंढी जो इस काम में सहायक होती है। इन आँकड़ों का उपयोग सामाजिक समस्याओं के उत्तर पाने और उनका विधिवत समाधान करने के लिए किया जाता है। हर प्रक्रिया की अपनी विशिष्ट कार्य प्रणाली अर्थात तकनीक है जो उचित प्रकार के आँकड़े एकत्र करने में काम आती है और उनके विश्लेषण में सहायक होती है। इस प्रकरण में हम आमतौर पर प्रयुक्त होने वाली विधियों और तकनीकों की चर्चा करेगें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- शोध के विभिन्न तरीकों का विवेचन कर पाऐगें जिनमें मुख्य है: ऐतिहासिक, तुलनात्मक, प्रयोगात्मक, कार्यक्षम, और सैद्धान्तिक तरीके;
- व्याख्या कर पाऐगें उन विभिन्न तरीकों की जिनके द्वारा आँकड़े एकत्र किए जाते है। इनमें मुख्य है: प्रेक्षण अर्थात ध्यानपूर्वक देखना, सर्वे करना, घटना विशेष का अध्ययन, साक्षात्कार और प्रश्नावली।

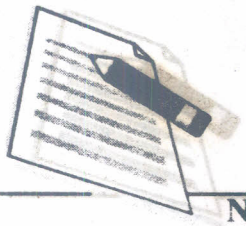

Notes

सैद्धान्तिक रूप से समाज की विज्ञानवत् शोध करने के पीछे अवधारणा यह है कि पूर्णतया निष्पक्ष और सर्वसामान्य आँकड़े एकत्र करना लगभग असम्भव है। समाजशास्त्री इस तथ्य को स्वीकार करते हैं और अपने शोध कार्य में सुव्यस्थिति क्रमबद्ध योजना के अनुसार ही जहाँ तक सम्भव हो काम करने का प्रयत्न करते हैं। इस हेतु उन्होंने कई प्रकार के तरीकों का उपयोग किया है। यद्यपि समाज-शास्त्री अनेक तरीके अपनाते हैं फिर भी एक व्यवस्थित, वैज्ञानिक कार्यप्रणाली उन सबका मूल आधार होता है। अब हम समाज शास्त्र में प्रयुक्त निम्नलिखित शोध विधियों की व्याख्या करेंगे।

4.1 ऐतिहासिक विधि

इतिहास के परिप्रेक्ष्य में आए सामाजिक परिवर्तनों का अध्ययन करने के लिए अनेक विधियाँ अपनाई जाती हैं। ऐतिहासिक विधि उनमें मुख्य विधि है। इस प्रणाली में शोधकर्ता अतीत के जिस काल खण्ड विशेष का अध्ययन करता है उस समय की घटनाओं के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करता है और इस जानकारी के स्रोतों की प्रामाणिकता के विश्लेषण पर अधिक जोर देता है। इतिहासकारों द्वारा जानकारी एकत्र करने के लिए प्रयुक्त होने वाले साधनों में सभी प्रकार के लिखित दस्तावेज शामिल हैं जैसे तात्कालिक कानून, सार्वजनिक दस्तावेज, रिपोर्टें, व्यावसायिक लेख, समाचार-पत्र, डायरियाँ, पत्र, वंश वृत्त, भ्रमण-कर्ताओं द्वारा प्रस्तुत यात्रा वृत्त और अन्य सभी प्रकार का साहित्य। इन सबके साथ-साथ उस दौर की बची खुची इमारतों और अन्य कलाकृतियों का भी सहारा लिया जाता है। इस विधि में सामाजिक संस्थाओं की उत्पत्ति, विकास और रूपान्तरण का भी अध्ययन किया जाता है। इसके लिए समाज शास्त्री एक या अनेक समाजों के बारे में एक लम्बे अरसे तक प्राप्त जानकारी का उपयोग करता है। इसकी मुख्य कार्यविधि यह है कि सामाजिक आचरण संबंधी अतीत के अनुभवों के आधार पर एक अन्तर्दृष्टि प्राप्त करने की चेष्टा की जाय।

समाजशास्त्रीय शोध में ऐतिहासिक विधि के दो मुख्य रूप विकसित हुए हैं। पहला रूप है प्राचीन समाजशास्त्रियों का, जो पहले ऐतिहासिक दर्शन और बाद में जीव विज्ञान के क्रमिक विकास के सिद्धान्त द्वारा प्रभावित हुआ। इस विधि में, अनुसंधान और शोध्य सिद्धान्तों के प्राथमिकता क्रम पर ध्यान दिया जाता है। इस शोध विधि के केन्द्र बिन्दु होते हैं: सामाजिक ढाँचों, संस्थाओं और सभ्यताओं के उद्भव, क्रामिक विकास तथा रूपान्तरण से जुड़ी समस्याऐं। इन सब का सम्पूर्ण मानव इतिहास और सभी प्रमुख सामाजिक संस्थाओं से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है जैसा कि ऑगस्ट कॉम्टे, स्पेंसर कृतियों से स्पष्ट है।

Notes

ऐतिहासिक विधि का दूसरा रूप मुख्यतः मेक्स वेबर की कृतियों में मिलता है। इस विषय से सम्बंधित उनकी उल्लेखनीय पुस्तकें हैं: 'पूँजीवाद की उत्पत्ति', 'आधुनिक नौकरशाही का विकास' और 'विश्व धर्मों का अर्थ व्यवस्था पर प्रभाव'। इस शोध प्रणाली की विशेष बात यह है कि समाज संरचना एवं प्रकारों में आऐ ऐतिहासिक परिवर्तनों की गहन जाँच पड़ताल उनमें की गई हैं और इन परिवर्तनों की समाज में आये कुछ दूसरे परिवर्तनों से तुलना भी की गई है। इस विधि में कारणिक एवं ऐतिहासिक दोनों व्याख्याओं का सुंदर समावेश पाया जाता है।

तुलनात्मक विधि

तुलनात्मक विधि के द्वारा अलग-अलग छोटे-बड़े समुदायों और सामाजिक संगठनों के आचार-व्यवहार में आए परिवर्तनों की तुलना की जाती है और विश्लेषण द्वारा यह पता किया जाता है कि इन परिवर्तनों में पारस्परिक क्या समानताएँ और क्या क्षमताएँ रहीं, और उनके मुख्य कारण क्या रहे। अध्ययन हेतु चुने गए लक्षण एक ही समाज के वर्ग विशेष में या बड़े-बड़े समाजों में परिलक्षित हो सकते हैं। उदाहरण के लिए विभिन्न श्रेणियों में स्थान बदलने की गतिशीलता

सामान्यतया तुलनात्मक विधि में, ऐतिहासिक विधि और मिश्रित सांस्कृतिक प्रणाली दोनों का समावेश होता है। कुछ लेखक तुलनात्मक और ऐतिहासिक दोनों विधियों को एक समान ही मानना चाहते हैं और तत्कालीन सभ्यताओं की तुलना करने के लिए इसको मिश्रित सांस्कृतिक विधि का नाम देते हैं।

समाजशास्त्रीय शोध के अन्तर्गत तुलनात्मक (अथवा सांस्कृतिक) विधि की मान्यता यह है कि एक समाज या सामाजिक व्यवस्था का अध्ययन तब तक सम्पूर्ण नहीं होता जब तक किसी दूसरे समाज या व्यवस्था से उसकी तुलना न की जाए। मानव शास्त्रियों ने इस विधि का भरपूर उपयोग यह बताने के लिए किया कि समाज का ढांचा कैसे विकसित होता है और कैसे बदलता है। हम यह निष्कर्ष तो निकाल लेते हैं कि हमारे समाज में आए परिवर्तनों में सार्व भौमिक मानवीय प्रवृत्तियाँ परिलक्षित हैं लेकिन हमें यह पता नहीं कि अन्य सामाजिक व्यवस्थाओं में और क्या क्या विशिष्टताएँ भरी पड़ी है। उन्हें जानने के लिए दोनों में तुलना करना आवश्यक है।

'सामाजिक संरचना' नामक पुस्तक में मरडॉक ने पारिवारिक ढाँचे और कार्य पद्धति का अध्ययन करने के लिए मिश्रित सांस्कृतिक अनुसंधान का उपयोग किया। उन्होंने पाया कि हर किसी के अन्दर एक प्रकार का सूक्ष्म परिवार होता है। यह सूक्ष्म परिवार विश्वव्यापी है। यही एकल परिवार या तो परिवार की संस्था का एकमात्र रूप है या फिर यह एक ऐसी इकाई है जो अन्यान्य प्रकार की जटिल इकाइयों की जन्म दाता है।

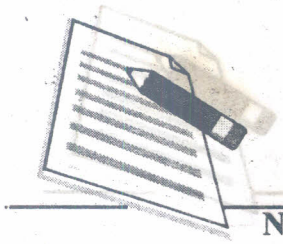

Notes

संक्षेप में, तुलनात्मक अध्ययन विधि का प्रयोग विभिन्न देशों, प्रदेशों या धर्मों से सम्बंधित आँकड़े एकत्र करने के लिए किया जाता है। इस विधि द्वारा यह पता करने का प्रयत्न किया जाता है कि क्या कोई ऐसे सामान्य तथ्य हैं जिनसे मानवीय आचार-व्यवहार की व्याख्या की जा सकती है। इस प्रकार तुलनात्मक विधि द्वारा विभिन्न समुदायों और संस्थाओं के बीच पाई जाने वाली समानताओं और विविधताओं को खोजने का प्रयास किया जाता है।

तुलनात्मक विधि एक लम्बे समय तक समाजशास्त्र में अध्ययन की सर्वोतम विधि मानी गई। यह परिकल्पना को परखने का एक साधन है। आधुनिकतम समाजशास्त्री इस विधि का उपयोग छोटे सीमित स्तर पर ही तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए करते हैं। उदाहरण के लिए शहरी जीवन और तलाक या किशोर अपराध की दर, परिवार का आकार और स्थान बदलने की प्रवृत्ति या सामाजिक स्तर और शिक्षा जैसे छोटे शोध कार्यों में ही इसका सदउपयोग किया जाता है। इस प्रकार प्राप्त अनुभव और जानकारी के आधार पर सैद्धान्तिक सहसम्बंध स्थापित किए गए हैं।

विकासवादी समाजशास्त्रियों ने पहले इस विधि को अपनाया था अवश्य, लेकिन दुर्खीम् ने अपनी पुस्तक ''सामाजिक विधियों के नियम'' में इसका महत्व बिधिवत प्रतिपादित किया। दुर्खीम् ने व्यवहार-प्रवृति का वर्गीकरण किया (जैसे आत्महत्या की दरें) ताकि सामाजिक घटनाओं में पारस्परिक सम्बंध विषयक प्रकल्पनाओं को परखा जा सके। इन नमूनों का उपयोग तुलना करने के लिए किया जा सकता है। यह विधि समाजशास्त्र के संदर्भ में प्रयोगात्मक विधि के निकटतम मानी जाती है। दुर्खीम् ने तुलनात्मक ऐतिहासिक विधि के पक्ष में अपना मत व्यक्त किया क्योंकि समाज शास्त्री प्रयोगशालावत् प्रयोग नहीं कर पाते थे और समान स्थितियों की क्रमबद्ध तरीके से तुलना द्वारा एक प्रकार के अप्रत्यक्ष प्रयोग ही कर पाते थे।

4.2 प्रयोगात्मक विधि

प्रयोग वह प्रक्रिया होती है जिसके अन्तर्गत शोधकर्त्ता दो सर्वसमान समूहों में से एक समूह यानि प्रायोगिक समूह की अवस्था में नया परिवर्तनशील आयाम जोड़ता है और दूसरे अप्रभावी समूह से तुलना कर इस नये आयाम का प्राथमिक समूह पर पड़ने वाले असर का अध्ययन करता है। यदि प्रायोगिक समूह पर इस नये आयाम का नियंत्रित समूह से भिन्न असर होता है तो प्रायोगिक समूह के व्यवहार में बदलाव आता है। यह निश्चय मान लिया जाता है कि परिवर्तन उस नये आयाम के जोड़ने के कारण ही आया है। प्रयोगशाला में सभी अवस्थाऐं पूर्व नियंत्रित होती हैं केवल उस अवस्था को

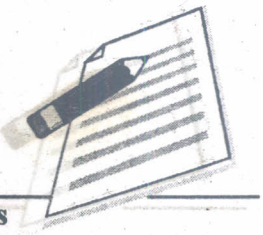

Notes

छोड़कर जो प्रायोगिक समूह में परिवर्तित हो जाती है और जो प्रयोग का विषय होती है। समाज-शास्त्र में भी क्षेत्र-परीक्षण किये गए हैं लेकिन उन का स्थान प्रयोगशाला न हो कर वास्तविक संसार होता है। जिन लोगों का व्यवहार अध्ययन का विषय बनाया जाता है उन्हें यह भी पता नहीं होता कि किसी शोधकर्त्ता के साथी उनके व्यवहार का अध्ययन कर रहे हैं। इस अध्ययन में कुछ पुट तुलनात्मक अध्ययन विधि का अवश्य होता है। इस तथ्य की पुष्टि के लिये यहाँ कुछ उदाहरण दिए जाते हैं।

अपने शोध में डेनियल ने 1965 में इंग्लैंड में होने वाले जातीय भेदभाव की सीमा का पता लगाना चाहा। इस काम के लिये उसने तीन अलग-अलग मूल के व्यक्तियों को चुना। एक इग्लैंड का, दूसरा वैस्टइन्डीज का और तीसरा हंगरी का रहने वाला था। उन तीनों से उसने आवास, नौकरी और बीमा कवर ढूँढने को कहा। उन तीनों की एक जैसी शैक्षणिक योग्यता थी, तीनों लगभग एक ही आयु के थे और तीनों को अंग्रेजी भाषा का अच्छा ज्ञान था। उन्होंने पाया कि इग्लैंड के निवासी ने सभी क्षेत्रों में दूसरे दोनों से बेहतर सफलता प्राप्त की। हंगरी के रहने वाले का दूसरा स्थान रहा जबकि वैस्ट इन्डीज वाले को सबसे कम सफलता मिली।

मायरसन ने अपनी पुस्तक में कुछ इस प्रकार के प्रश्न पूछे: क्या आपने कभी देखा है कि कॉफी घर में घुसकर लोग कहाँ बैठते हैं? क्या आपने कभी यह जानने की कोशिश की है कि तब क्या होता है जब लोग उन्हीं सीटों पर बैठने के इच्छुक होते हैं जिन पर पहले से ही कुछ लोग बैठे हैं बजाय उन सीटों के जो खाली पड़ी हैं? यदि आपने ऐसा किया है तो निश्चय ही आपने उस परीक्षण विधि का प्रयोग किया जिसे समकालीन समाजशास्त्र के क्षेत्र विशेष में अध्ययन के लिए हाल ही में लोकप्रियता प्राप्त हुई है।

इस सन्दर्भ में मायरसन ने ऐसे शोधकार्यों का भी वर्णन किया है जो कैफे, लाइब्रेरी आदि जगहों पर होने वाली परिस्थितिबद्ध घटनाएँ दर्शाती हैं जो तब घटती है जब कोई अचानक वहाँ पहले से बैठे लोगों को बिना बताए उनके अधिकार क्षेत्र में अथवा अवान्छनीय रूप से उनके बीच में आ टपकता है जिसकी उन्हें कोई आशंका नहीं थी। वहाँ बैठे लोगों की यह धारणा कि केवल वे ही उस स्थान पर सदा बैठ सकते हैं, सब पर प्रकट हो जाती है।

4.3 कार्यक्षम विधि

जीव विज्ञान के क्रमिक विकास वादियों के शोध की अलग कार्य प्रणाली और अलग

Notes

दावे थे। मूलत: इसके विरोध स्वरूप समाजशास्त्र और समाज विकास सम्बंधी विज्ञान के क्षेत्र में अध्ययन कर्ताओं ने अपनी अलग कार्यक्षम विधि का विकास किया। कार्यक्षम विधि और कार्य विश्लेषण जैस शब्द एक दूसरे के लिए समान रूप से प्रयोग में लाये जाते हैं। फिर भी कार्यक्षम विधि की चर्चा से पहले इसके और कार्य विश्लेषण के बीच अन्तर स्पष्ट करना आवश्यक है। कार्य विश्लेषण की प्रक्रिया में शोधकर्ता उन सभी क्रिया-कलापों का विवेचन करता है जो बार-बार दोहराई जाती हैं और देखता है कि उनका समकालीन विस्तृत सामाजिक व्यवस्था पर, जिसके वे स्वयं अंग है, क्या असर पड़ता है। इस तरह कार्यक्षम विधि समाजशास्त्र और जीव विज्ञान क्षेत्र में अनुसंधान करने का एक अच्छा साधन सिद्ध होती है। इसका उद्देश्य उन सामाजिक और साँस्कृतिक तथ्य-तत्वों का पता लगाना और उनका परीक्षण करना है जो व्यापक रूप से समाज में विद्यमान होते हैं। बहुधा इसका अर्थ यह माना जाता है कि ये तत्व किस तरह सम्पूर्ण समाज व्यवस्था को प्रभावित करते हैं और उससे स्वयं भी प्रभावित होते हैं जिसके साथ वह हमेशा रहते हैं। दूसरे शब्दों में कार्यक्षम विधि का अर्थ कार्यक्षमता और सामाजिक ढाँचे की कार्य प्रणाली का विवेचन भी होता है। समाजशास्त्र के सन्दर्भ में इस प्रणाली का उल्लेख पहली बार 19 वीं शताब्दी के फ्राँसिसी समाजशास्त्री एमिल दुर्खीम और 20वीं सदी के अमेरीकी समाजशास्त्री ताल्कोट पार्सन तथा उनके शिष्यों ने किया। लेकिन इस विधि की जड़ें जैविक क्रमिक विकास विज्ञान की कार्यप्रणाली से जुड़ी हैं। इस क्षेत्र की उल्लेखनीय कृतियाँ ब्रोनिस्ला मालिनोव्सकी और ए. आर. रेडक्लिफ ब्राउन द्वारा रचो गई थी। इस विधि का मूल बिन्दु समग्र समाज व्यवस्था का अध्ययन है जिसका उद्देश्य यह पता करना है कि व्यवस्था कैसे कार्य करती है, इसमें बदलाव कैसे आते हैं और इनका क्या और कैसे प्रभाव परिलक्षित होता है। इस प्रकार यह विधि एक ऐसा दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है जिसके द्वारा समाज के विश्लेषण का प्रयत्न किया जा सके। इसका केन्द्र विन्दु समाज में व्यवस्था और स्थिरता के स्रोत-उदगम का पता लगाना है। जिन बातों पर विशेष ध्यान दिया जाता है वे हैं: (a) समाज संस्थाएँ किस प्रकार सामाजिक जीवन में व्यवस्था कायम रखने में सहायता करती है और (b) समाजिक व्यवस्था आचार-व्यवहार को किस प्रकार प्रभावित करती है।

कार्यक्षमता वादी प्रणाली के अन्तर्गत समाज की कल्पना उस व्यवस्था के रूप में की जाती है जिस के अनेक अंग एक दूसरे से इस प्रकार जुड़े होते है कि उन्हें अलग नहीं किया जा सकता है। और, न ही उन्हें अकेले-अकेले में समझा जा सकता है। इनमें से यदि किसी एक में कोई बदलाव आता है तो उससे सारी व्यवस्था का संतुलन कुछ हद तक बिगड़ जाता है। और कभी कभी इसका असर दूसरे अंगों पर इस सीमा तक
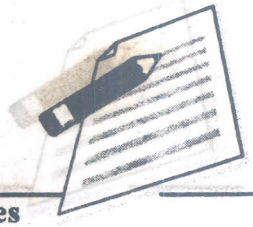
Notes

पड़ जाता है कि सारी व्यवस्था को ही बदलने की आवश्यकता अनुभव की जाने लगती है।

19वीं सदी में कार्यक्षम विधि का उद्भव जीव विज्ञान के जैविक क्रमिक विकास के नमूने के तौर पर हुआ। और हर्बर्ट स्पेंसर ने समाज के विश्लेषण में जैविक विज्ञान जैसी ही समानता ढूंढी जिसमें जीव का विशेष स्थान होता है। उनका कहना था कि समाज भी एक जीवित इकाई होता है। जैसे एक जीव के अंग-प्रत्यंग एक दूसरे से अभिन्न रूप में जुड़े होते हैं और वे सब मिलकर एक ही दिशा में काम करते है वैसी ही समाज की भी दशा है। एक जीवित इकाई की तरह ही समाज के अनेक अंगों का सुचारुरूप से काम करने के लिए एक साथ मिलकर समन्वित रूप से चलना पड़ता है। जिस प्रकार शरीर में हृदय सभी अंगों को रक्त प्रदान करता है उसी तरह सामाजिक संस्थाएँ-व्यवस्थाएँ भी सारे समाज के प्रति अपना विशिष्ट कार्य करती हैं।

रॉबर्ट के. मर्टन ने इस जैविक समानता की धारणा का खण्डन किया। फिर भी वह कार्यक्षम विधि की मूल भावना से अलग न हो सके। उनके विचार में समाज की वही छवि रही जिसमें समाज के अनेक अंग एक दूसरे से जुड़े हैं और जो सब मिल कर समाज का संचालन करते हैं। 'मर्टन' ने कार्य का अर्थ वे सभी कार्य-कलाप समझा जिन का सदप्रभाव समाज में संतुलन बनाए रखने में परिलक्षित होता है। इसके विपरीत ऐसे भी कार्य होते हैं जो संतुलन को बिगाड़ने में स्पष्ट रूप से सहायक होते हैं।

कार्यक्षम विश्लेषण की दृष्टि में समूह एक ऐसी कार्यरत इकाई है जिसके सभी अंग समूचे समूह की भलाई के लिए काम करते हैं। जब हम किसी एक छोटे अंग के कार्य के विषय में विचार करते हैं तो हमें यह देखना होता है कि इस छोटे अंग के कार्यों का बड़े अंग (समूह) के कार्यों से क्या सम्बंध है। इस विचार धारा का किसी भी सामाजिक समूह या सारी सामाजिक व्यवस्था अथवा एक कॉलेज या परिवार जैसी छोटी इकाई के बारे में भी लागू किया जा सकता है। अन्त में हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि कार्यक्षम विश्लेषण वह प्रक्रिया है जिनका संकेत उन तत्वों और शक्तियों की ओर होता है जो समाज में एकीकरण, संतुलन या विघटन उत्पन्न करती हैं। इस विधि द्वारा हम समाज की विभिन्न इकाईयों के बीच किसी एक समय में उपलब्ध पारस्परिक सम्बंधों का अध्ययन कर सकते हैं।

4.4 आनुभविक विधि

इस विधि में क्षेत्र विशेष से आँकड़े इकट्ठे किए जाते है। समाज सम्बंधी तथ्यों का यथावत-रूप में अध्ययन और विवेचन किया जाता है। इस विधि में प्रयुक्त तकनीक

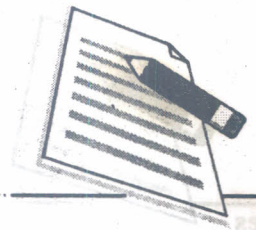

Notes

हैं प्रेक्षण (ध्यान पूर्वक देखना), सर्वे करना, प्रयोग करना और घटना या व्यक्ति विशेष का अध्ययन।

पाठगत प्रश्न 4.1

इन प्रश्नों के सामने सत्य या असत्य, जो भी लागू हो, लिखे:

1. एक समाज का पूर्ण अध्ययन तब तक नहीं किया जा सकता है जब तक उसकी तुलना दूसरे समाज से न की जाए। (सत्य/असत्य)
2. परिवार के ढाँचे और कर्त्तव्यों का अध्ययन करने के लिए मर्ड़ोक क्लाईदुए ने मिश्रित सांस्कृतिक विधि का उपयोग किया। (सत्यं/असत्य)
3. दुर्खीम ने तुलनात्मक अध्ययन विधि का महत्व प्रति पादित किया। (सत्य/असत्य)
4. समाजशास्त्र में प्रयोग संभव है। (सत्य/असत्य)
5. ऐतिहासिक विधि में जानकारी के मुख्य स्रोत क्या हैं?
6. समाजशास्त्र में अनुसधान की कितनी विधियाँ है?
7. कार्यक्षम वाद और कार्यक्षम विश्लेषण में क्या अन्तर है।
8. आनुभविक विधि में कौन सी तकनीकें उपयोग में लाई जाती है।

4.5 आँकड़ों के स्रोत

समाजशास्त्री अनुसंधान करने में आरंभिक और गौण या द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का उपयोग करते हैं। आरंभिक आँकड़े वे होते हैं जो वे स्वयं एकत्र करते हैं अपने अध्ययन विषयक क्षेत्र से चाहे यह आत्म साक्षात्कार द्वारा, प्रश्नावली में दिए गए उत्तरों द्वारा या प्रेक्षण द्वारा हो। द्वितीयक या गौण आँकड़े वे होते हैं जो शोधकर्ता अन्य स्रोतों से प्राप्त करते हैं या जिन्हें उन्होंने कहीं और दर्ज किया हुआ हो और जो आवश्यक रूप से आम आदमी के उपयोग की वस्तु नहीं है। गौण आँकड़ों के मुख्य स्रोत है

(a) जीवनियाँ, आत्मकथाएँ, पत्र, डायरियाँ, उपन्यास;

(b) पत्रिकाएँ, उच्च कोटि के समाचार पत्र, रेडियो प्रसारण, टी. वी. कार्यक्रम;

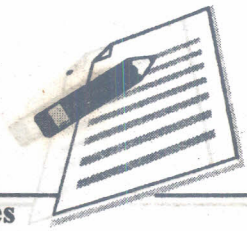

Notes

(c) जनगणना सम्बंधी आँकड़े, व्यापार फर्मो के रिकार्ड, पंजीकृत आँकड़े, जन्म-मृत्यु के आँकड़े, न्यायालयों के रिकार्ड; समाज सेवी संस्थाओं तथा सरकारी विभागों के अर्थ व्यवस्था से संम्बंधित दस्तावेज, दीन दुखियों की सहायता करने वालों संस्थाओं तथा नीतियों को प्रभावित करने वाले गुटों द्वारा संचित किए गए आँकड़े।

हमें इस बात का ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि किसी भी प्रकार के शोध कार्य, विशेषरूप से सामाजिक शोध, में दोनों ही तरह के आँकड़ों का उपयोग किया जाता है।

4.6 आँकड़े इकट्ठा करने की विधियाँ

समाजशास्त्री शोध विषय के स्वरूप को ध्यान में रख कर आँकड़े इकट्ठा करने की विभिन्न तकनीकों का उपयोग करते हैं। इनमें जो सबसे मुख्य हैं वे इस प्रकार हैं;

1. प्रेक्षण या किसी चीज़ को बड़े ध्यान से देखना-परखना
2. सर्वेक्षण
3. घटना विशेष का गहन अध्ययन
4. प्रश्नावली
5. आत्मसाक्षात्कार

4.7 प्रेक्षण

प्रेक्षण विधि का आँकड़े इकट्ठा करने में उपयोग तब किया जाता है जहाँ कोई अन्य दूसरी विधि काम में नहीं आ सकती हो घटना विशेष को ध्यान से देख-समझ कर ही आवश्यक सामग्री एकत्र की जा सकती है। उदाहरणार्थ चुनाव के समय वोट डालने वालों का व्यवहार। इस विधि का उद्देश्य मानव के व्यवहार का अध्ययन करना है उसी स्थान और समय पर जहाँ वह घटित हो रहा हो।

प्रेक्षण दो तरह से सम्भव है

(i) स्वयं भागीदार पात्र बनकर लिया गया प्रेक्षण

(ii) बिना स्वयं पात्र बने केवल ध्यान से देख-समझ कर

भागीदार बनकर लिया गया प्रेक्षण

यह घटना विशेष में भाग लेकर आँकड़े एकत्र करने का एक तरीका है। एक छोटे और

लगभग अशिक्षित समाज में भाग लेकर यह काम आसानी से किया जा सकता हैं। लेकिन अनेक वर्गों से निर्मित संश्लिष्ट समाज में इसका प्रयोग करना कठिन हो जाता है। लेकिन इस तकनीक का प्रयोग तब बड़ा ही सरल और उपयोगी सिद्ध होता है जब शोधकर्त्ता उस समुदाय का अंग बन कर स्थिति-परिस्थिती को तह तक पहुंच कर अन्दर की बात जान लेता है। इस तकनीक का प्रयोग सफलता पूर्वक करने के लिए एक खास अनुभव की आवश्यकता होती है क्योंकि बहुधा उस समय वह अपनापन भुला कर निष्पक्ष जानकारी प्राप्त करने में असफल भी हो सकता है। अतः परिपक्वता अति आवश्यक होती है।

भागीदार बने बिना लिए गए प्रेक्षण

समुदाय या परिस्थिति की गतिविधिओं में बिना भागी बने, बिना हस्तक्षेप किए और बिना कोई जुड़ाव अनुभव किए प्रेक्षक इस विधि का प्रयोग करता है। वह दूर रह कर ही उनके व्यवहार को ध्यानपूर्वक देखता-परखता है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि जिन लोगों का बरताव देखा-परखा जा रहा है वे कुछ असहजता का अनुभव करते हैं, जिसके कारण उनके व्यवहार में अस्वाभाविकता भी आ सकती है।

भागी दार बने बिना प्रेक्षण की प्रक्रिया किसी पूर्वनिर्धारित योजना पर आधारित नहीं होती है। लेकिन सामाजिक परिस्थितियों का एक मापदँड तय किया जा सकता है और उस मापदँड के अनुरूप परिस्थितियों के बारे में योजनाबद्ध कार्यक्रम तय किया जा सकता है। इस प्रकार सही तरह की जानकारी प्राप्त की जा सकती है और उसके परिणाम सही तरीके से रिकार्ड किये जा सकते हैं। यह इसलिए सम्भव हो पाता है, चूंकि, प्रेक्षक उस सामाजिक प्रक्रिया में क्रियाशील होकर सम्मिलित नहीं होता जिसका वह प्रेक्षण कर रहा होता है। प्रेक्षक उस अवस्था में किसी भी प्रकार से प्रभावित नहीं होता है। इसलिए, वह दूर खड़ा रह कर क्रमबद्ध तरीके से स्थिति का जायजा ले सकता है कि कब, कहाँ और क्या कैसे-कैसे हुआ।

सरंटकोस (1998) ने अन्य छः प्रकार के प्रेक्षणों का वर्णन किया है। यह इस प्रकार हैं:

सुनियोजित तथा अनियोजित प्रेक्षणः सुनियोजित प्रेक्षण की विशेषता यह है कि इसके अन्तर्गत चुनी हुई इकाइयों की पहले सरल परिभाषा बनाई जाती है, यह तय किया जाता है कि किस-किस प्रकार की जानकारी प्राप्त करनी है, प्रेक्षण-दशाओं के मानक निर्धारित किये जाते हैं, व उपयुक्त आंकड़ों एवं प्रेक्षणों का चुनाव किया जाता है। जिस प्रेक्षण को कोई सुनियोजित परिभाषा और परिधि नहीं होती है उस दशा में

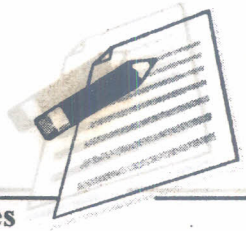

Notes

स्थिति सर्वथा भिन्न होती है। सुनियोजित प्रेक्षण में वस्तु-स्थिति लगभग तय होती है और प्रेक्षक के इधर उधर भटकने का अवसर नहीं के बराबर होता है। उसे एक निश्चित दिशा में ही अपना काम करना पड़ता है। जबकि अनियोजित प्रेक्षण में इन बन्धनों की बाधा नहीं होती है।

प्राकृतिक और प्रयोगशाला में लिया गया प्रेक्षण

प्राकृतिक प्रेक्षण प्रकृति की गोद में किया जाता है बिना किसी बनावटी साज-सामान के। जिस प्रेक्षण के लिए प्रयोगशाला की आवश्यकता होती है उसे इसी नाम से अर्थात प्रयोगशाला में लिया गया प्रेक्षण कहते हैं।

खुला और छिपा प्रेक्षण

जब प्रेक्षण बिना किसी दुराव-छुपाव के खुले रूप से किया जाता है तो उसे खुला प्रेक्षण कहते हैं। इसके अन्तर्गत प्रेक्षक और प्रेक्ष्य दोनों एक दूसरे के आमने सामने होते हैं एक दूसरे को पहचानते हैं और यह भी जानते हैं कि प्रेक्षण किस उद्देश्य के लिए लिए जा रहे हैं। छुप कर किये गए प्रेक्षण में दोनों एक दूसरे से छुपे रहते हैं और सारा काम गुप चुप किया जाता है।

प्रत्यक्ष और परोक्ष प्रेक्षण

प्रत्यक्ष रूप से किये गए प्रेक्षण में प्रेक्षक लगभग निष्क्रय रहता है अर्थात जिस स्थिति का अध्ययन किया जाता है प्रेक्षक उसमें सक्रिय भाग नहीं लेता। जैसा, जो हो रहा है, दिखाई दे रहा है, वह उसे ही रिकॉर्ड कर लेता है। अप्रत्यक्ष प्रेक्षण में वस्तु स्थिति को सीधे आखों से नहीं देखा जाता। प्रेक्षित वस्तु या तो मृत होती है या अध्ययन में भाग नहीं ले पाती हैं। इस विधि का उपयोग अपराध वैज्ञानिक बहुधा उन स्थितियों में करते हैं जिन्हें वे स्वयं नहीं देख पाते जैसे कत्ल-हत्या के मामले।

गुप्त और मुक्त प्रेक्षण

गुप्त रूप से किये गए प्रेक्षण में जिस व्यक्ति का अध्ययन किया जा रहा है उसे इस बात का पता ही नहीं होता है कि कोई उसके ऊपर पैनी नजर रखे हुए है। साधारणतया शोधकर्त्ता स्वयं उस वस्तु-स्थिति में सक्रिय रूप से भाग ले रहा होता है नहीं तो उसे यह अहसास दिलाने में कठिनाई होगी कि वह वहाँ उपस्थित है या था। इस प्रकार के प्रेक्षण में कोइ पूर्व नियोजित योजना नहीं होती है। कभी-कभी इस कारण उन्हें अपने सामान्य व्यवहार से हट कर भी काम करना पड़ता है।

उदाहरण के लिए यदि पुलिसकर्मी को यह पता हो कि थाने में उसका व्यवहार किसी के द्वारा परखा-देखा जा रहा है तो वह अपराधियों के प्रति निम्न स्तर का घटिया

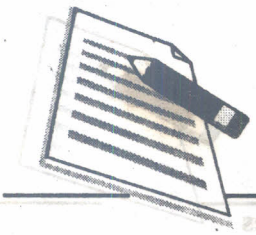

Notes

व्यवहार नहीं करेगा। उल्टा वह यह दिखाने का प्रयास करेगा कि वह नरम स्वभाव का व्यक्ति है और उसके हृदय में सहानुभूति भी है।

सामाजिक सर्वेक्षण

एक विशेष समुदाय की किसी विकट समस्या को समझने और उसे दूर करने के लिए उपाय सुझाने की दृष्टि से सर्वेक्षण किये जाते हैं जो बड़े ही सुनियोजित और विस्तृत होते हैं। सर्वेक्षण का उद्देश्य जानकारी प्राप्त करना होता है। इस प्रकार एकत्र की गयी जानकारी और आँकडे जितने विस्तृत और सटीक होते हैं समस्या के समाधान की योजना उतनी ही उत्तम होगी और लक्ष्य की प्राप्ति समुदाय के लिए उतनी ही सम्पूर्ण और उपयोगी होगी।

सर्वेक्षण के कई तरीकें हैं। प्रेक्ष्य घटक को एक प्रश्नावली भेजी जाती है या लोगों के साथ सीधे साक्षात्कार किया जाता है। और इस प्रकार एकत्र किये गए आंकड़ो-तथ्यों की संख्यिकीय विश्लेषण विधि द्वारा क्रमबद्ध तरीके से व्याख्या की जाती है। सर्वेक्षण का प्रयोग समाजशास्त्र के क्षेत्र में बड़े पैमाने पर किया जाता है विशेषकर प्रयोगात्मक विधि और स्वयं भागीदार बनकर प्रेक्षण करने के तरीके के विकल्प के रूप में। सर्वेक्षण में नमूनों को किसी निश्चित निष्कर्ष पर पहुंचने के उद्देश्य से चुना जाता है। एक लम्बे-चौड़े समुदाय से लिये गए इन नमूनों के आधार पर व्याख्या की जाती है जो लगभग ठीक होती है और बड़ी इकाई के बारे में सही राय बनाई जा सकती है। इसके उदाहरण हैं सरकार द्वारा कराए गए सर्वेक्षण और जनता की राय जानने के लिये किये गए सर्वेक्षण। कभी-कभी समाज-शास्त्री नमूनों की जगह सारी प्रजाती का अध्ययन कर लेते हैं, विशेष तौर पर तब, जब इस प्रजाती का आकार बड़ा न हो। जब नमूने एक बड़े जन समुदाय से चुने जाते हैं तो समाजशास्त्री इन नमूनों को ही बड़े समुदाय के रूप में मान लेते हैं और इसके आधार पर बड़े समुदाय के बारे में भी अपनी राय बना लेते हैं जो बड़े समुदाय के लिए सर्वथा लागू नहीं होती। वस्तु-स्थिति विशेष के अध्ययन में भी सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया जा सकता है। शोध की प्रकृति के अनुरूप समाज-शास्त्री भिन्न-भिन्न प्रकार के सर्वेक्षणों का अपने काम में उपयोग करते हैं।

सर्वेक्षणों का वर्गीकरण

1. **वर्णनात्मकः** क्या वांछनीय है यह जानने के लिए घटना जैसे घट रही है उसका उसी प्रकार वर्णन करना।
2. **व्याख्यात्मकः** क्या परिवर्तन हो रहा है और उसके क्या कारण हैं इस बात का पता लगाना।

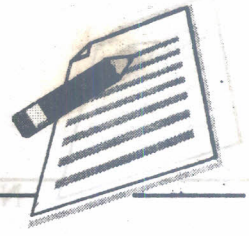

Notes

3. **भविष्य दर्शक:** भविष्य में क्या परिवर्तन होने वाले हैं और उनका नीतियों पर क्या प्रभाव पड़ सकता है इस वारे में भविष्यवाणी करना।

4. **मूल्यांकनात्मक:** भूत में अपनाई गई नीतियों के क्या परिणाम रहें इस बात का पता करना, मूल्यांकन करना।

वस्तु–स्थिति विशेष का अध्ययन

समाज में हुई ऐसी घटनाएँ जो दिखाई दें उन की जानकारी प्राप्त करने के लिए एक स्थिति विशेष का अध्ययन किया जाता है। इस अध्ययन का विषय एक व्यक्ति, एक समुदाय, एक संस्था, एक कक्षा, एक घटना, एक प्रक्रिया, एक समाज या सामाजिक जीवन की कोई भी और इकाई हो सकती है। केस से सम्बंधित सभी जानकारी एकत्र की जाती है और उसे केस के अनुरूप संजोया जाता है। अध्ययन के विषय सम्बंधी सकल आंकड़ों को एक विशिष्ट पात्रता दी जाती है और विभिन्न प्रकार के उपलब्ध (तथ्यों) का इसके साथ सम्बंध जोड़ा जाता है। इस तरह छोटी-छोटी बातों तथ्यों का भी विस्तार से समावेश किया जाता है। ऐसा करना दूसरी विधियों के माध्यम से आसान नहीं होता और उन्हें गौण समझ कर अलग-थलग कर दिए जाने की संभावना रहती है। इस विधि की मूलभूत धारणा यह है कि एक विशिष्ट प्रकार की वस्तु-स्थिति में अति विशिष्ट घटना का गहन-गंभीर अध्ययन करके उसी के समान घटनाओं के बारे में सामान्यीकरण किया जा सकता है।

संक्षेप में वस्तु-स्थिति विशेष के अध्ययन द्वारा किसी एक अकेली इकाई के व्यवहार-बरताव का अनेक तरीके अपना कर विश्लेषण किया जाता है। इस विधि में कुछ मापनों की आवश्यकता हो सकती है। (उदाहरण के लिए पुरुषों द्वारा घर के बर्तन धोने की प्रवृत्ति)। इस विधि में अध्ययन के जिन तरीकों का प्रयोग किया जाता है वे हैं प्रेक्षण, साक्षात्कार, प्रश्नावली, समाचार पत्रों में छपी रिपोर्टें, पत्र, डायरियां और स्वयं की भागीदारी।

प्रश्नावली

प्रश्नावली बड़े ध्यान से तैयार की जानी चाहिए और इसकी उपयोगिता का निरीक्षण भी अवश्य कर लेना चाहिए। इसमें जिन शब्दों या शब्द समूहों का प्रयोग किया जाए वे सरल और सहज समझें जाने वाले हों। प्रश्न अस्पष्ट और संदिग्ध न हो। उनके

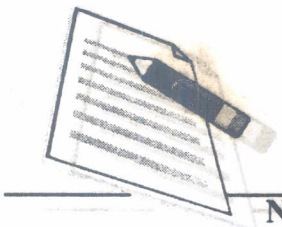

Notes

सरल, छोटे और विश्लेषण योग्य उत्तर हों। इनसे किसी प्रकार के नैतिक मूल्य न जुड़े हों और इनसे वे आँकड़े एकत्र किये जाएँ जिन से किसी प्राक्कल्पना को सिद्ध किया जा सके या परखा जा सके। शोध कर्त्ता को यह तय करना होता है कि लोगों से आमने-सामने होकर प्रश्नों के उत्तर लें या इन्हें डाक द्वारा उनके पास भेजें। प्रश्नावली आमतौर पर उत्तरदाताओं के पास डाक से भेज दी जाती है।

साक्षात्कार

आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के लिए शोधकर्त्ता उन व्यक्तियों से स्वयं वार्तालाप करता है जिन के पास वाँछनीय जानकारी होती है। अनेक समाज विज्ञानी आँकड़े एकत्र करने के लिए इस विधि को काम में लाते हैं। साक्षात्कार के लिए एक साक्षात्कार सारणी तैयार की जाती हैं जो स्वयं शोधकर्त्ता द्वारा उत्तर देने वाले व्यक्ति से आमने-सामने वार्तालाप करते-करते भरी जाती है। साक्षात्कार दो प्रकार के होते हैं: पहला पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार एवं औपचारिक जिस में योजनाबद्ध तरीके से ही काम किया जाता है। सभी प्रश्न पहले से ही तय होते हैं और इनकी शब्दावली भी एक जैसी ही होती है। यह एक मानकीकृत और पूर्णतया नियंत्रित कार्य विधि है। दूसरा, अनौपचारिक साक्षात्कार होता है जिसके अन्तर्गत उत्तर दाता अपने उत्तरों को बड़ा-छोटा कर सकता हैं इसकी कोई पूर्व निश्चित योजना या शब्द जाल भी नहीं होता। यदि उत्तरदाता को आपत्ति न हो तो एक टेप रिकार्डर इस काम में बड़ा सरल एवं उपयोगी साधन सिद्ध हो सकता है। इस सारे काम में साक्षात्कार करने वाले को बड़ी चुस्ती और होशियारी दिखा कर उत्तरदाता से शोध विषयक सभी उपयुक्त जानकारी प्राप्त करनी होती है।

साक्षात्कार विधि का चयन कई बातों पर निर्भर करता है जैसे अध्ययन के लिए चुने गए विषय का उद्देश्य, समय और धन साधन की उपलब्धी तथा शोधकर्त्ता की कार्य कुशलता। उत्तर जितने उच्च स्तर के और सटीक होगें वस्तु-स्थिति सम्बंधी प्रतिक्रिया, मनोवृति और राय उतनी ही खरी और स्पष्ट होने की आशा की जा सकती है। उत्तरों की पारस्परिक तुलना भी की जा सकती है। उत्तर जितने मुक्त होगें उनसे उतनी ही अधिक विस्तृत और साफ तस्वीर सामने आएगी विशेष कर तब जब किसी एक केस के बारे में जानकारी प्राप्त करनी हो।

उपर्युक्त विधियाँ एक दूसरे से अलग नहीं हैं इन सब का सम्मिश्रण भी किया जा सकता है। इन सब का एकमात्र उद्देश्य यह पता करना है कि लोग जिस तरह का व्यवहार करते हैं वे ऐसा क्यों करते हैं?

Notes

इन अध्ययन विधियों ने ही समाज-शास्त्र को सिद्धान्त और आधारभूत धारणा-संकल्पना दी हैं। ये विधियाँ एक दूसरे के विकल्प नहीं हैं इन्हें एक दूसरे के साथ मिलाकर प्रयोग में लाया जा सकता है। यह इस बात पर निर्भर करना है कि आपको खोजना क्या है। एक ही विषय के भिन्न-भिन्न पहलुओं के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए एक विधि दूसरी विधि से अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकती है। उदाहरण के लिए सर्वेक्षण करते समय प्रेक्षण विधि की भी आवश्यकता पड़ती है।

पाठगत प्रश्न 4.2

1. किस-किस प्रकार से आँकड़े एकत्र किये जाते हैं?
2. आँकड़े एकत्र करने की 5 तकनीकों के नाम बताएँ?
3. प्रेक्षण की दो मुख्य विधियाँ कौन सी हैं?
4. क्या सर्वेक्षणों का उपयोग घटना-वस्तु विशेष विधि में किया जा सकता है?
5. साक्षात्कार किन दो प्रकार का होता है?

पाठान्त प्रश्न

1. ऐतिहासिक, तुलनात्मक, प्रयोगात्मक और कार्यक्षम विधियों का विवेचन कीजिए।
2. सैद्धान्तिक विधि क्या है? इस विधि में आँकड़े एकत्र करने की तकनीकों का वर्णन करें।
3. प्रेक्षण की परिभाषा क्या है और यह कितने प्रकार का होता है? व्याख्या करें।
4. वस्तु-स्थिति अध्ययन विधि क्या होती है। इसमें और सर्वेक्षण में क्या अन्तर है?
5. प्रश्नावली और प्रेक्षण तालिका की व्याख्या करें। इन दोनों में अन्तर स्पष्ट करें।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

4.1

1. सत्य
2. असत्य
3. सत्य
4. सत्य

Notes

5. 4.1 देखें 6. पाँच 7. 4.2 देखें 8. 4.4 देखें

4.2

1. 4.5 देखें 2. 4.6 देखें 3. 4.7 देखें

4. 4.7 देखें 5. 4.7 देखें